203. 74. ἔχω μεν, εἰ καὶ τὸ παραυτίκα πᾶ
ἡμῖν χρήσιμον ὠφέλιμον ἂ καθ' ἡμᾶς.
205. 78. consumpsit ὑμᾶς delendum. nam corruptio
est ἀλλὰ τί με δεῖ λέγειν πάσας ὑμᾶς. rogamus deos,
ut nobis permittant, μὴ ἀμνημονεῖν τάδε.
ut politis haec non
memoriam abjicere, τὴν
τῶν ἔργων δὲ ὧν ἔπραξαν
οἱ πατέρες ὑμῶν.
51. ἰκέτας τε
207. 34. f. ἀκοῦσαι χρὴ τὰ πρὸς ἡμᾶς μόνον ἐξαπάγγελλε τὰς. 52. malem ὑμῖν. ut videtur em
36. τε] l. γε. ascribentis ἐπιστήσει τῶν πα-
39. ἡ ἱκανὴ. τρώων ὑμῖν τάφων.
208. 86. ἠδικήκαμεν.
10. μορίους videtur δέον ἐπισε-
ἰκέτας χρὴ ἀκ.
209. 13. ante μήτε videtur ὑποδιαιρεῖσθαι δεῖ
non retulistis paribus paria, nobis, qui spopon-
deramus vobis et recuperamus, nulla usuros
vi, sed persuasionibus effecturos, ut sponte sua
turbe excederent illi, quibus non placeret cum
Thebanis commanere. 24. primum
commate man-
dandum; nam
ὁπως φάτε
regitur a supe-
riore πράξαν-
τες 65. 21.
46. τε] δε'
48. τὰ ἐναντία hic debes ad-
verbialiter accipere, pro ἐκ τῶν ἐναντίων
et subaudire ἄξιοι εἰσιν.
210. 71. τι ante πεπόνθασι delendum.
74. f. καὶ ὅτε ὕστερον
74. α] f. αὖ. in illo χ subaudire e superio-
ribus καὶ ἠξίουν οἱ λακεδαιμόνιοι τὰς
πλαταιέας ἡσυχάζειν ὕστερον αὖ, τότε, ὅτε
περὶ ἐκείνου
ἀπεστάλησαν. 90. ἀπωλλύμεθα. in imperfecto.